# कृष्ण विवर

जयंत विष्णु नारलीकर

"यह कम्प्यूटर तो बहुत ही परेशान कर रहा है, यार!" कॉफी के प्याले में चम्मच चलाते हुए, प्रकाश बड़ी झल्लाहट से बोला! "पिछले हफ्ते से कम-से-कम पचास बार पूछ चुका हूँ। पर वह एक ही जवाब पर अड़ा हुआ है।"

"क्या कहता है, तुम्हारा कम्प्यूटर?" संजय ने भोला बनते हुए पूछा! वह शुद्ध गणित का विद्यार्थी था। अत: कम्प्यूटर को कुछ तुच्छ भाव से देखता था। कोई चित्रकार किसी पुताई करने वाले को जिस प्रकार से देखता है, बस वैसे ही।

"कम्प्यूटर कहता है कि मेरे मूल सिद्धान्त ही गलत हैं। मैंने सोचा था कि 'प्रॉफ' द्वारा दिया गया डेटा कम्प्यूटर के सुपुर्द कर दूँगा और सारा दिन हाइकिंग टूर पर निकल जाऊँगा। पर 'मैन प्रपोज़िज़ एण्ड कम्प्यूटर डिसपोज़िज़', यही सत्य है।"

यर्किस वेधशाला से गुरु ग्रह के बारे में मिली नई जानकारी, कम्प्यूटर में जाँच कराने के लिए, प्रकाश के पास आई थी।

"तुमने जोड़-घटा में गड़बड़ कर

दी होगी।" यूँ भी फिज़िक्स वालों का गणित कच्चा ही होता है – प्रत्येक गणित वाले की यही धारणा होती है। उसी बात को बड़े विश्वास से संजय ने कह डाला।

"देखो, मेरे जोड़-बाकी का सवाल ही नहीं उठता! यदि गलती होगी भी तो न्यूटन तथा आइन्स्टीन की समझो। ग्रहों की गति उन्हीं के सिद्धान्तों पर तय की जाती है। यह बात तुम जैसे अल्पज्ञानी को पता होनी चाहिए और यह कम्प्यूटर कहता है कि यह जानकारी सिद्धान्तों के अनुसार नहीं है। प्रॉफ को विश्वास है कि डेटा गलत नहीं है। पता नहीं, गड़बड़ कहाँ है।" प्रकाश शिकायत भरे स्वर में बोला।

"मेरे विचार से तुम खगोल शास्त्र के दशावतारों का जाप करो, ताकि तुम्हें प्रेरणा मिल सके!" मज़ाक में संजय का मंत्रोच्चार शुरू हो गया। "बोलो, न्यूटनाय नमः, हैल्य नमः, हर्शलाय नमः, एडम् साय नमः एडिंग्टनाय नमः....."

"एडम्स... क्या पते की बात कही यार। बालादपि सुभाषितम् ग्राह्यम्।" संजय की पीठ पर धौल जमाकर, कॉफी वहीं छोड़कर प्रकाश तेज़ी-से निकल गया।

संजय ठगा-सा देखता रह गया, क्योंकि इंस्टिट्यूट में घनचक्कर बने रहने का हक सिर्फ गणित वालों का था, ऐसा उसका मानना था। प्रकाश का पागलपन उसे रास नहीं आया।

***

**इंस्टिट्यूट** में खगोलशास्त्र के प्रोफेसर रमेश अग्रवाल ही 'प्रॉफ' हैं। ग्रहों तथा उपग्रहों के भ्रमण के गणित 'सेलेस्टियल मैकेनिक्स' में वे दुनियाभर में प्रख्यात थे। इक्कीसवीं सदी के आरम्भ में इस विषय में अनुसन्धान करने वाले, बहुत कम वैज्ञानिक थे। यदि इस विषय में कोई गम्भीर या कठिन प्रश्न सामने आता तो उससे सम्बन्धित खगोलशास्त्री, अग्रवालजी के पास दौड़े चले आते। इसीलिए गुरु ग्रह के बारे में प्राप्त नई जानकारी उनके पास भेज दी गई थी।

प्रकाश पावटे उनका प्रिय विद्यार्थी था। नई जानकारी का निरीक्षण करने के पश्चात् अधिक जाँच हेतु उन्होंने उसे प्रकाश के पास भेज दिया। "अन्तिम निष्कर्ष निकालने से पहले मुझसे न मिलना," ऐसी हिदायत उसे देने की ज़रूरत भी नहीं थी।

इस बात को एक हफ्ता गुज़र गया, और प्रकाश का कोई अता-पता नहीं। इस बात से वे आश्चर्य में डूब गए। उन्हें खुद उससे जाकर मिलना होगा, ऐसा वे सोच ही रहे थे कि प्रकाश दौड़ता हुआ उनके कमरे में दाखिल हुआ। कम्प्यूटर द्वारा दिए गए जवाबों का सारा पुलिन्दा उसने टेबल पर पटका और जल्दी-जल्दी कुछ बताने लगा। उसकी एक भी बात प्रोफेसर साहब के पल्ले नहीं पड़ रही थी। इससे पहले उन्होंने प्रकाश को

कभी इतना उत्तेजित नहीं देखा था।

"आराम-से! आराम-से अपनी बात कहो। प्रति मिनट सिर्फ एक ही वाक्य बोलो, तब ही मैं कुछ समझ पाऊँगा।" वे शान्ति से बोले।

"सर! सन् 1846 के आसपास एडम्स ने यूरेनस ग्रह की गति में अनियमितता पाकर यूरेनस के निकट मौजूद नेप्च्यून ग्रह को खोज निकाला। मुझे विश्वास है कि गुरु के निकट भी ग्रह जैसी ही कोई वस्तु आ पहुँची है। कम्प्यूटर के जवाब, इसी बात की पुष्टि कर रहे हैं।"

बिना सबूत कोई भी घोषणा न करने के नियम का पालन, प्रोफेसर साहब तथा उनके विद्यार्थी सदैव करते थे। फिर भी प्रकाश का कथन इस कदर अनपेक्षित था कि उन्होंने स्वयं ही इसकी जाँच करने का निर्णय किया। अगले दस दिन, वे दोनों इसी काम में जी-जान से जुटे रहे और विभिन्न खगोलशास्त्रीय पद्धतियों के सहारे इस कथन की सत्यता की पुष्टि की।

लन्दन से प्रकाशित होने वाली साप्ताहिक विज्ञान पत्रिका *नेचर* में अग्रवाल एवं प्रकाश पावटे का लेख प्रकाशित हुआ और दुनियाभर के खगोल वैज्ञानिकों के बीच खलबली मच गई। गुरु की गति में उत्पन्न अनियमितता का कारण उसके निकट मौजूद कोई नई वस्तु ही है, यही उस लेख का सारांश था।

उस नवीन वस्तु का अस्थायी सम्बोधन 'क्ष' तय हुआ। उसके घनत्व, गति, गुरु से दूरी आदि की उस लेख में विस्तृत जानकारी दी गई थी। 'क्ष' को लेकर अनेक तर्क दिए जाने लगे। किसी वैज्ञानिक के अनुसार मंगल तथा गुरु के दरम्यान घूमने वाले अनेक एस्टरॉइड्स में से शायद कुछ इकट्ठा आ गए होंगे। दुनिया की तमाम वेधशालाओं में 'क्ष' को प्रत्यक्ष रूप से देखने की जैसे होड़ लग गई।

परन्तु कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

***

**इस** बात को तीन साल बीत गए। 'क्ष' कहीं भी दिखाई नहीं दिया पर उसके अस्तित्व के प्रति वैज्ञानिकों का दृढ़ विश्वास बढ़ता चला गया। अन्ततः 'क्ष' की ओर एक आकाशयान भेजने का निर्णय लिया गया। यह बात इसलिए महत्वपूर्ण थी, क्योंकि सदियों से मान्यता प्राप्त गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्तों का भविष्य ही इस खोज पर निर्भर था। 'क्ष' को भारतीय वैज्ञानिकों ने खोजा था। इसलिए आकाशयान की उड़ान के लिए भारत के 'श्रीहरिकोट्टा' बेस को चुना गया और उस यान पर प्रवासी वैज्ञानिक के तौर पर जाने का सम्मान प्रकाश पावटे को मिला। उनके साथ एकमात्र सहप्रवासी के रूप में अन्तरिक्ष यान के अमरीकन कैप्टन जॉन फाकनर को चुना गया। वर्ल्ड स्पेस ऑर्गनाइज़ेशन (WSO) का भारत से

गुरु की ओर कूच करने वाला यह दसवाँ यान था। इसीलिए उसका सांकेतिक नाम डब्ल्यू.आई.जे.-10 था। प्रस्थान के लिए उचित दिन तय करने के पश्चात् डब्ल्यू.आई.जे.-10 की उड़ान की तैयारियाँ होने लगीं।

तीन वर्ष की इस अवधि के दरम्यान प्रकाश पावटे और संजय जोशी ने पीएच.डी. हासिल कर ली तथा अपने ही इंस्टिट्यूट में फेलो बन गए। संजय की शादी हुए एक साल बीत गया। प्रकाश अभी तक कुँवारा ही था पर दोनों की प्रगाढ़ दोस्ती पहले जैसी ही बनी रही। गपशप और दिल्लगी लगातार चलती रहती। अन्तरिक्ष की उड़ान के एक हफ्ते पहले संजय की नवजात बेटी का नामकरण समारोह था। प्रकाश बालिका के लिए एक बड़ा-सा खिलौना, टेडीबियर लेकर संजय के घर पहुँचा।

"भाभीजी, क्या नाम रखा बेटी का?" टेडीबियर देते हुए उसने पूछा।

"अनुपमा। गोद में लेंगे क्या इसे?"

"ना बाबा! दूर से ठीक है। शिशुओं को हाथों में सम्भालने से बहुत डरता हूँ मैं।"

"तब दूर से बताएँ, किस पर गई है हमारी बेटी?"

"आप दोनों पर!" प्रकाश ने डिप्लोमैटिक जवाब दिया। "बड़ी प्यारी है बच्ची, अट्ठारह-बीस साल बाद देखना, कितने रोमियो आगे-पीछे घूमेंगे इसके।"

"आप ही रुक जाइए, अट्ठारह-बीस साल। हम आपको ही दामाद चुन लेंगे।"

बच्ची पैदा हुई ही थी कि अनुपमा की माँ ने दामाद को खोजना आरम्भ कर दिया। पर, शादी की बात छिड़ते ही, फिर चाहे अट्ठारह साल के बाद की बात क्यों न हो, प्रकाश एकदम शरमा गया। उसने आनन-फानन में वहाँ से विदा ली और 'नौ-दो ग्यारह' हो गया।

"तुमने तो बेकार ही डरा दिया ब्रह्मचारी महाराज को!" संजय पत्नी से बोला।

* * *

**डब्ल्यू**.आई.जे.-10 की यात्रा नियत समय पर आरम्भ हो गई। पृथ्वी पर बने अनेक अन्तरिक्ष स्टेशनों से यान का सम्पर्क लगातार बना रहा। सन्देशों का आदान-प्रदान नियमित रूप से हो रहा था, परन्तु अन्तरिक्ष में गुरु के आसपास पहुँचने पर, अचानक परिस्थिति में काफी बदलाव नज़र आए। प्रकाश ने मिशन कंट्रोल की ओर निम्नलिखित सन्देश भेजा।

"लगता है, 'क्ष' के परिक्षेत्र में पहुँच गया हूँ। पर, अभी तक कुछ भी दिखाई नहीं दिया। हाँ, यह ज़रूर है कि 'क्ष' की दिशा में अनेक वस्तुएँ जैसे मीटिओराइट, एस्टरॉइड आदि बड़ी गति से जाते हुई दिखाई दे रहे हैं। यदि 'क्ष' में चमक होती तो शायद मैं यह कहता कि भगवद्गीता में दीए

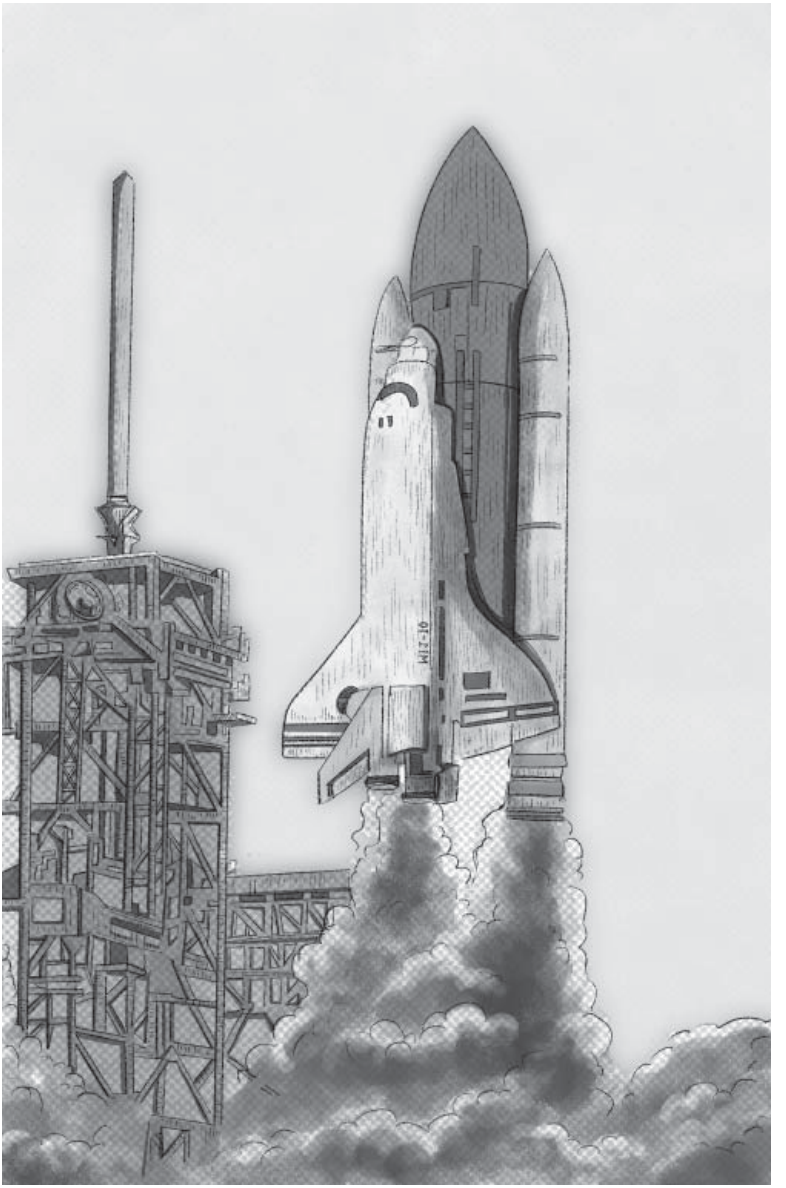

की लौ पर निछावर होने वाले पतंगों के वर्णन..."

"ठीक है, ठीक है। यूँ कवि कल्पनाओं में मत उलझो। तुम्हारा अगला कदम क्या होगा?" कंट्रोल ने टोका।

"अजी, नाभिक विस्फोट को देखकर ओपेनहायमर को गीता का स्मरण हो आया था परन्तु मुझे यहाँ जो दिखाई दे रहा है या जो दिखाई नहीं दे रहा, वह ऐसे विस्फोट से अधिक विचित्र है। मैं इसे पास से देखना चाहता हूँ।" प्रकाश का सन्देश था।

"स्वीकृति है पर यदि खतरा महसूस हो तो तुरन्त लौट आना होगा।"

"अवश्य! मैं डब्ल्यू.आई.जे.-10 का पूरा ध्यान रखूँगा।" प्रकाश द्वारा कंट्रोल को भेजा गया, यह आखिरी सन्देश था।

प्रकाश की आज्ञानुसार कैप्टन जॉन ने यान को 'क्ष' की दिशा में मोड़ दिया। धीरे-धीरे यान की गति तेज़ होती चली गई। "कैप्टन, इतनी तेज़ी-से मत चलो। हमें उसके अधिक निकट नहीं जाना है।" प्रकाश ने सचेत किया।

"मैंने तो इंजन कब से बन्द कर रखा है। पता नहीं, गति तेज़ क्यों हो गई!" गतिमापक की ओर चिन्ता से देखते हुए जॉन ने जवाब दिया। गतिमापक की सुई लगातार आगे बढ़ती जा रही थी।

प्रकाश के दिमाग में एक विचार बिजली की तरह कौंध गया और वह यान में स्थित कम्प्यूटर की ओर अत्यन्त तेज़ी-से दौड़ पड़ा। अभी तक उपयोग में न लाया हुआ एक प्रोग्राम उसने कम्प्यूटर में डाला। उस पर लेबल लगा था... 'कृष्ण विवर'।

साथ ही, यान की वेगवृद्धि की जानकारी को पंच करने के बाद कम्प्यूटर में पहुँचा दिया। पलभर में कम्प्यूटर ने छपा हुआ जवाब प्रस्तुत कर दिया। उसे पढ़ते ही प्रकाश तेज़ी-से जॉन के पास जा पहुँचा।

"जॉन, जॉन, 'क्ष' के बारे में जानकारी मिल गई है। मेरे हिसाब से अब बड़ी देर हो गई है। 'क्ष' तो कृष्ण विवर यानी ब्लैक होल है। और हम, बड़ी तेज़ी-से उसकी और खिंचते जा रहे हैं।"

कृष्ण विवर यानी एक बहुत ही आकुंचित पिण्ड जिसका गुरुत्वाकर्षण इतना अधिक होता है कि उसमें से प्रकाश भी बाहर की ओर निकल ही नहीं पाता और इसीलिए 'क्ष' पृथ्वी पर बसी वेधशालाओं को, या उसके निकट पहुँचे जॉन एवं प्रकाश को भी दिखाई नहीं दिया। आइन्स्टाइन का गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त कृष्ण विवर की पुष्टि करता था पर चन्द वैज्ञानिकों को ही इसकी जानकारी थी। अतः मुट्ठीभर वैज्ञानिकों ने ही 'क्ष' को कृष्ण विवर माना था, अन्य सभी ने इस सम्भावना को अनदेखा कर दिया।

जवाब क्या है, यह जानते हुए भी जॉन ने पूछा, "अब आगे क्या होगा?" "शायद हम 'क्ष' के जबड़े में जा गिरेंगे। आशा की एक धुँधली-सी किरण बाकी है। हमारी यात्रा का मार्ग 'क्ष' के केन्द्रबिन्दु से न होकर, उसके बाहरी घेरे पर निश्चित किया गया है। कम्प्यूटर निश्चित रूप से तो बता नहीं पाएगा परन्तु फिर भी मैं उसे पूछता हूँ। तब तक तुम कंट्रोल से सम्पर्क बनाओ।"

जॉन ने कंट्रोल को सन्देश भेजने के कई प्रयत्न किए पर कोई फायदा नहीं हुआ। कंट्रोल की ओर से तेज़ गति से उच्चारित शब्दों का प्रवाह चला आ रहा था जिन्हें समझ पाना मुश्किल था, तभी प्रकाश वहाँ आया। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं।

"जॉन, कम्प्यूटर ने हमारी मृत्यु की भविष्यवाणी की है। उसके अनुसार हम 'क्ष' के पास पहुँचकर करीब दस लाख परिक्रमाएँ करेंगे और फिर इसके अन्दर समा जाएँगे। कंट्रोल से क्या सन्देश आया है?" जॉन ने उसे अपना अनुभव बताया। कंट्रोल से सम्पर्क टूट चुका था, सो अब सभी निर्णय स्वयं ही लेने होंगे, यह प्रकाश की समझ में आ गया।

तब प्रकाश बोला, "आशा की एक छोटी किरण बाकी है। हम कृष्ण विवर के नज़दीक एक अस्थिर गोलाकार कक्ष के निकट से गुज़रने वाले हैं। उस मार्ग की अस्थिरता का हमें लाभ उठाना होगा। उचित समय पर एक रॉकेट के फायर करने पर आसपास निर्मित अस्थिरता की वजह से शायद हमारा यान बाहर फेंका जा सकेगा। यह एक सम्भावना मात्र है। यदि ऐसा घटित होता है तो अच्छा ही है वरना दुनिया को राम-राम कहने का समय आ गया है। अब हमें शीत कक्ष में प्रवेश करना होगा।"

"शीत कक्ष में प्रवेश, किस लिए?" जॉन ने पूछा।

"देखो, जैसे-जैसे हम 'क्ष' के निकट पहुँचते जाएँगे, उसके गुरुत्वाकर्षण की टाइडल पावर हमें अधिकाधिक प्रतीत होगी। इसी टाइडल पावर की वजह से चन्द्र का गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी पर समुद्र में ज्वार-भाटे के समय प्रतीत होता है।"

"अब कल्पना करो कि 'क्ष' की ओर जाते समय तुम्हारा सिर 'क्ष' के निकट है और पैर दूसरी ओर हैं। ऐसी स्थिति में 'क्ष' के गुरुत्वाकर्षण का जितना प्रभाव तुम्हारे सिर पर पड़ेगा, उतना पैरों पर नहीं। तब क्या होगा? ऐसे में शरीर पर सिर से पाँव तक खिंचाव पैदा होगा।" अब जॉन की बुद्धि काम करने लगी थी। "मेरा शरीर सिर से लेकर पैरों तक खींचा चला जाएगा," जॉन ने कहा।

"बिलकुल ठीक! और यह खिंचाव इतना अधिक होगा कि हम उसे सह नहीं पाएँगे। अब यदि हम शीत कक्ष में जमे होंगे तब शायद हमारा शरीर

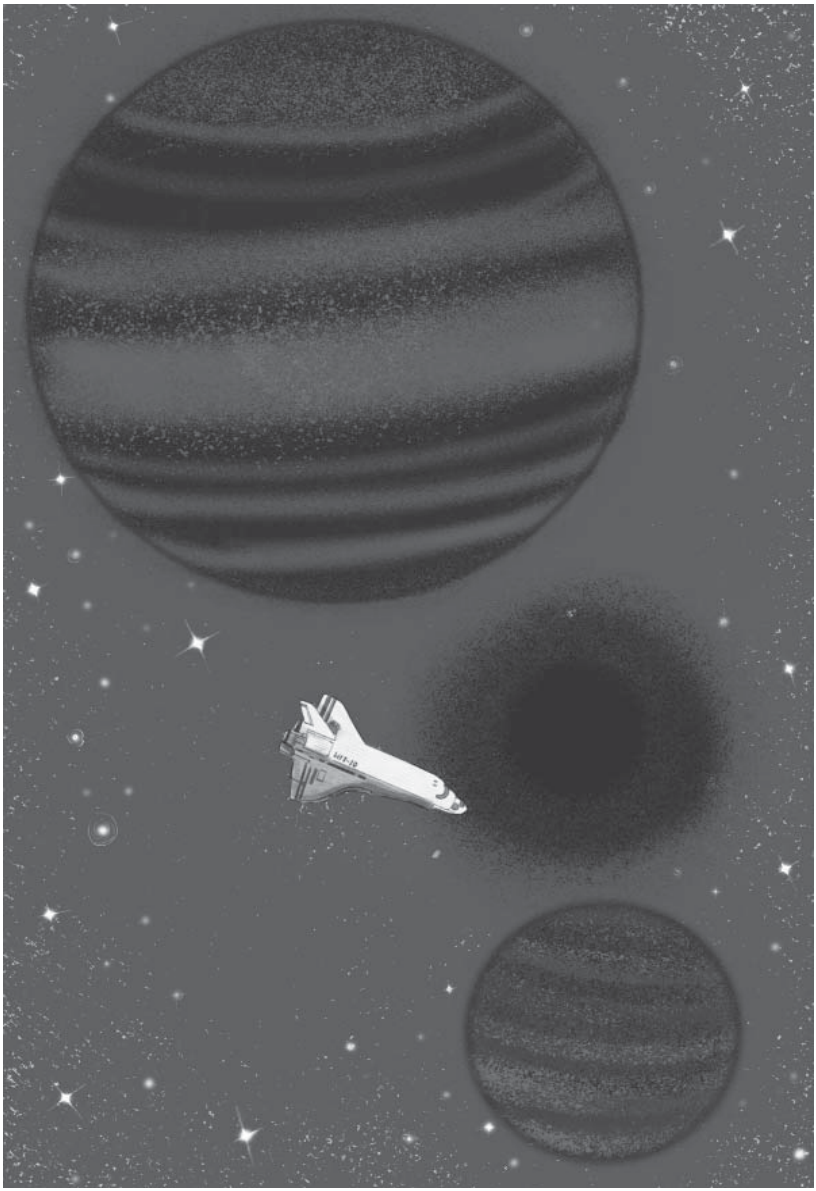

उस खिंचाव को सह ले।" प्रकाश ने समझाया।

"तुम आकाशयान को स्वयंचलित ऑटो-पायलट मोड में रख देना ताकि कम्प्यूटर उसे पृथ्वी की दिशा दिखा सके। यदि हमारा नसीब बलवान होगा तो बेस पर मौजूद लोग हमें जगा देंगे।" सारी तैयारी कर लेने के पश्चात् शीत कक्ष में प्रवेश करने से पहले, दोनों ने आकाश का विहंग दर्शन किया। आज तारों का समूह, विशेष तेजोमय हो चमक रहा है, ऐसा उन्हें प्रतीत हुआ।

क्या उनके लिए दुनिया का यही अन्तिम दर्शन था?

***

**जब** श्रीहरिकोट्टा बेस पर डब्ल्यू. आइ.जे.-10 नामक आकाशयान उतरा तो वहाँ उपस्थित सभी वैज्ञानिक चकित रह गए। इस नाम के किसी यान का उन्हें स्मरण तक न था। खास बात तो यह थी कि इस यान के आने की कोई पूर्व-सूचना भी न मिली थी। इसलिए इस अचानक आए अनिमंत्रित यान की गहरी जाँच-पड़ताल की गई। अन्दर गहरी नींद में डूबे दोनों कुम्भकर्णों को बाहर निकाला गया। उन्हें मेक्सिमम सिक्युरिटी मेडिकल सेक्शन (एम. एस.एम.एस.) में भेज दिया गया। बेस पर मौजूद सभी लोग इन दोनों के नाम तथा चेहरों से पूर्णतया अनभिज्ञ थे।

"ज़रा आराम-से। डॉक्टर साहब ने आपको हिलने-डुलने तथा सोच-विचार करने की मनाही की है। एम.एस.एम.एस. की परिचारिका अनुपमा, प्रकाश से कह रही थी। यहाँ के चीफ वैज्ञानिक जल्दी ही आप से भेंट करेंगे। उन्हीं से कह दीजिएगा, सारा कुछ!"

"मेरे अपने एक-दो मित्रों को तो कम-से-कम फोन करने दीजिए। मैं कुशल हूँ, इतना तो कहने दें। देखिए, मेरी यह ऑटोमैटिक घड़ी बता रही है कि मैं पूरे तीन साल बाद लौटा हूँ। वे लोग चिन्ता में पड़ गए होंगे कि मैं कहाँ गायब हो गया।"

"तीन साल?" प्रकाश की बात सुनकर बेस के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. रामास्वामी ने पूछा जो कमरे में घुस रहे थे। "तीन वर्ष पहले, यहाँ से कोई भी मानव-यान नहीं भेजे गए। बल्कि पाँच साल से हम स्वयंचलित यंत्रों वाले मानव रहित यान ही अन्तरिक्ष में भेज रहे हैं।"

"बिलकुल असम्भव! आप अपने रिकॉर्ड की जाँच करें।" प्रकाश आश्चर्य से चीखा। मेरी घड़ी के अनुसार मैं तथा जॉन फाकनर, ठीक तीन वर्ष पन्द्रह दिन पहले गुरु की दिशा में निकल पड़े थे। जॉन से पूछें अथवा प्रोफेसर रमेश अग्रवालजी से सम्पर्क करें ताकि आप को यकीन हो जाए।"

"प्रोफेसर साहब तो अब रिटायर

हो गए हैं। पर, हम उनसे सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश करेंगे।" रामास्वामी बोले।

प्रकाश का दिमाग चकरा गया। जिस समय वह डब्ल्यू.आई.जे.-10 से प्रवास हेतु निकला था तब अग्रवालजी चालीस की कगार पर थे। उसने डरते-डरते पूछा, "कौन-सा सन् चल रहा है?"

इसके जवाब में रामास्वामीजी ने उसके हाथ में उसी दिन का अखबार थमा दिया। उस पर लिखी तारीख को पढ़कर प्रकाश को गश आ गया। वह पूरे बीस वर्षों बाद पृथ्वी पर लौटा था।

***

**प्रकाश** को सामान्य होने में करीब दो हफ्ते लगे। इस कार्य में नर्स अनुपमा बहुत सहायक सिद्ध हुई और उस ब्रह्मचारी के विकेट डाउन होने के आसार नज़र आने लगे। प्रेम की इस आँखमिचोली में अन्तरिक्ष-यात्रा का नाम भी न निकले, डॉक्टर द्वारा दी गई इस सख्त हिदायत का अनुपमा ने पूरे मनोयोग से पालन किया। प्रकाश के स्वस्थ होते ही रामास्वामीजी ने उसकी अग्रवालजी से भेंट करवाई। अग्रवालजी ने प्रकाश के सकुशल लौटने के लिए सर्वप्रथम उसे बधाई दी तथा उसे अनुकूल वधू के मिल जाने की भी बधाई दे डाली। फिर उन्होंने कालहरण का खुलासा किया। यह सब कृष्ण विवर के प्रखर गुरुत्वाकर्षण का ही सारा कमाल था। निद्रावस्था में कृष्ण विवर के चारों ओर चक्कर लगाते समय कालमापन

के अनुसार एक सेकण्ड की अवधि ही पर्याप्त थी क्योंकि अत्यन्त तीव्र गुरुत्वाकर्षण ने उनकी काल की गति को करीब-करीब शून्य कर दिया था। उस एक सेकण्ड की अवधि में बाकी की दुनिया सत्रह साल आगे निकल गई। जॉन तथा प्रकाश की बीस वर्षीय तरुणाई वैसी ही बनी रही। आइन्स्टाइन की रिलेटिविटी के जीते-जागते उदाहरण बन गए थे ये दोनों।

"संजय कहाँ है? मुझे देखकर उसे ज़बर्दस्त झटका लगेगा।" हँसता हुआ प्रकाश बोला।

"संजय...कौन संजय?" अनुपमा ने पूछा।

"संजय जोशी, मेरा परम मित्र। हम दोनों एक ही इंस्टिट्यूट में अनुसन्धान का काम कर रहे थे। कई बार मेरा-उसका विवाद... अरे! रो क्यों रही हो?"

"वे मेरे पिता थे। माँ और उनका विमान दुर्घटना में देहान्त हो गया... और मैं अनाथ हो गई।" अनुपमा ने सुबकते हुए कहा।

अनुपमा की माँ द्वारा किया गया 'दामाद अनुसन्धान' आखिरकार सफल हो गया था... कृष्ण विवर की कृपा से।

**(1974)**

---

**जयंत विष्णु नारलीकर (1938):** प्रबुद्ध वैज्ञानिक और विज्ञान कथाकार। कैंब्रिज से गणित में डिग्रियाँ हासिल करने के बाद उन्होंने खगोल-विद्या और खगोल-भौतिकी में विशेष प्राविणय प्राप्त किया। किंग्ज़ कॉलेज के फेलो और इंस्टिट्यूट ऑफ थिओरेटिकल एस्ट्रोनॉमी के संस्थापक सदस्य के रूप में कुछ समय कैंब्रिज में रहे। IUCAA (Inter-University Centre for Astronomy and Astrophysics), पुणे के संस्थापक सदस्य। नारलीकर 'पद्मभूषण' और 'पद्मविभूषण' सहित कई राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हैं।

**सभी चित्र: अदिति दीक्षित:** दिल्ली में स्थित लेखिका, फिल्म निर्माता, चित्रकार और स्टॉप मोशन एनिमेटर हैं। उनकी स्टॉप मोशन शॉर्ट फिल्म *डेज़ी* वर्तमान में दुनियाभर में 25 से अधिक फेस्टिवल में नामांकित हुई है और उसे 6 फेस्टिवल में सर्वश्रेष्ठ छात्र स्टॉप मोशन शॉर्ट का पुरस्कार दिया गया है। उन्होंने भारत की पहली वयस्क एनिमेटेड व्यंग्य श्रृंखला *आपकी पूजिता* के दो एपिसोड भी लिखे और निर्देशित किए हैं।

**मराठी से हिन्दी अनुवाद:** मीरा नांदगाँवकर।

पठनीयता को बेहतर करने के लिए इस अनुवाद को परिष्कृत किया गया है।

यह कहानी सन् 2013 में *विज्ञान प्रसार* द्वारा प्रकाशित जयंत विष्णु नारलीकर के विज्ञान कथाओं के संकलन *कृष्ण विवर और अन्य विज्ञान कथाएँ* से साभार।